।। शम्भवे गुरवे नमः ।।

शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउण्डेशन

परिपत्र - प्रथम

"आओ, चलें शिव की ओर"

पंजीकृत कार्यालय :

सी.डी. - 530, सेक्टर - 02, एच.ई.सी., धुर्वा, राँची।

पिन कोड-834004, झारखण्ड, भारत

दूरभाष - 0651-2442580

"शम्भवे गुरवे नमः"

परिपत्र - प्रथम

प्रेषक : अर्चित आनन्द, मुख्य सलाहकार,
शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउण्डेशन, शिव शिष्य परिवार एवं वैश्विक शिव शिष्य परिवार, राँची।

सेवा में,
अध्यक्ष,
शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन, वैश्विक शिव शिष्य परिवार एवं शिव शिष्य परिवार, राँची।

विषय :- शिव शिष्य परिवार के चारों परिपत्रों के आलोक में अब छः वर्षों के उपरान्त अतिरिक्त परामर्श की आवश्यकता के संबंध में।

महाशय,

उपर्युक्त विषय के संबंध में कहना है कि बाल्य काल से ही मैं शिव शिष्यता से जुड़ा हुआ हूँ। मैंने शिव शिष्य परिवार के द्वारा निर्गत चारो परिपत्रों का गहन अध्ययन किया है। चारो परिपत्र दिनांक 15.06.2008, दिनांक 25.04.2010, दिनांक 12.03.2012 एवं 30.10.2016 अनुकरणीय हैं तथा शिव शिष्य परिवार के अलावा शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन एवं वैश्विक शिव शिष्य परिवार (न्यास द्वैय) के द्वारा उनका अनुपालन किया जाना चाहिए। जहां तक मुझे स्मरण है न्यास द्वैय के द्वारा भी इन परिपत्रों को अंगीकृत किया गया है। मेरा परामर्श होगा की तीनो संगठन उक्त परिपत्रों का अनुपालन करें। परिपत्रों के मुख्य बिन्दुओं पर संस्था की कार्यकारिणी समिति तथा न्यास द्वैय की परिषद् की बैठक में उनके अनुपालन हेतु बल दिया जाय।

चतुर्थ परिपत्र दिनांक 30.10.2016 से लगभग छः वर्ष बीत चुके हैं। समय के अनुसार लोगों की मानसिकता एवं स्थितियों-परिस्थितियों में परिवर्तन आया है। शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन के द्वारा यथासंभव शिव कार्य को सही दिशा देने के निमित्त जिलों में सजग शिव शिष्य/शिष्याओं की जिला शिव कार्य समिति के गठन का कार्य जारी है। मेरे विचार से शिव शिष्य परिवार एवं वैश्विक शिव शिष्य परिवार के लिए भी ये समितियां दायित्व वहन करें क्योंकि तीनो संगठनों का प्रयोजन एक ही है और वह है भगवान शिव की शिष्यता, जो एक पूर्णतः आध्यात्मिक विधा है, से जनमानस का सही रूप से जुड़ाव सुनिश्चित करना। यह सत्य है कि किसी संगठन के परिचालन में व्यक्ति और अर्थ दोनों की अहम भूमिका है। अर्थ की व्यवस्था संगठन खुद करे किन्तु यह ध्यान रखना अपेक्षित होगा कि भगवान शिव की शिष्यता में इसका कुप्रभाव नहीं पड़े। अर्थात किसी भी कार्य जो भगवान शिव की शिष्यता से जुड़ा है, में पूर्ण पारदर्शिता रहे।

जिला शिव कार्य समितियों तथा सभी शिव शिष्य/शिष्याओं के कतिपय मार्गदर्शक कंडिकाएँ :-

कंडिका :

1. वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा शिव के गुरू स्वरूप से जन मानस को जोड़ने पर बल दिया गया है ताकि एक-एक व्यक्ति का शिव के गुरू स्वरूप से जुड़ाव हो सके। उन्होने लौकिक कार्यों के प्रति सचेत रहते हुए शिव कार्य के प्रति सजग, सचेष्ट एवं संवेदनशील होने को कहा है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझाने की आवश्यकता है कि शिव केवल नाम के ही नहीं अपितु काम के गुरू हैं। यह सूचना राजा से रसोईया तक पूर्व से है कि शिव गुरू, जगतगुरू, आदिगुरू, गुरूओं के गुरू, महागुरू हैं। अतएव हमें जनमानस को मात्र सूचना नहीं देनी है, उन्हें शिव के गुरू स्वरूप से अवगत कराना है, समझाना है कि शिव का शिष्य आसानी से हुआ जा सकता है ताकि उनका मन शिव को अपना गुरू बनाये।

जनमानस को यह समझाना होगा कि महेश्वर शिव(महादेव) से सुख, संतान, समृद्धि, सम्मान प्राप्त करने का सदियों पुराना सिलसिला रहा है और जनमानस में यह परंपरा बड़ी पुरानी है। जब महादेव (अवढ़रदानी) से दान लिया जा सकता है तो उनसे (वे ही जगतगुरू हैं) ज्ञान क्यों नहीं प्राप्त किया जा सकता। बिना ज्ञान अथवा समझ के दान की कोई सार्थकता नहीं है। आशंका रहेगी कि ज्ञान रहित दान आत्मघाती हो सकता है। जन-जन को यह समझाना है कि महादेव अवढ़रदानी हैं तो ज्ञान के दाता भी हैं। आप जानते हैं कि भारतीय आध्यात्मिक धारा में शिव को ईश्वर, परमेश्वर, महादेव तथा परमात्मा कहा गया है और समझा गया है यानि वे ही समस्त शक्तियों के जनक हैं। वरेण्य गुरूभ्राता ने कहा है कि गीत के बोल भले समाप्त हो जायें किन्तु श्रोताओं के मन में शिव शिष्यता की गूंज सदैव बनी रहे। ऐसी ही गुरू चर्चा शिव शिष्यों को गुरू दया से करनी है।

आप जानते है कि व्यक्ति का किसी सत्ता से जुड़ाव भावनात्मक होता है। भाव की परिधि में प्रवेश के उपरांत ही शिव की शिष्यता परिलक्षित हो सकेगी और व्यक्ति का भाव उसके आचरण एवं व्यवहार से प्रकट होता है। हमारी चेष्टा होनी चाहिए कि शिव की शिष्यता जो प्रथमतः एक विचार है, भाव में रूपांतरित होकर व्यक्ति का स्वभाव बन जाय। शिष्यता का भाव अन्ततः प्रेम में रूपायित होता है।

2. **महोत्सवों/परिचर्चाओं एवं कार्यक्रमों की व्यवस्था हेतु कतिपय निर्देश :-**

(1) परिपत्र-प्रथम की कंडिका-12, परिपत्र-द्वितीय एवं तृतीय की कंडिका-03 में उल्लेख किया गया है कि भजनों का समावेश शिव गुरू चर्चा के समय को कम कर देता है अतएव इसे न्यून किया जाय। आप जानते हैं कि भजन, कीर्तन, प्रवचन, हवन, आरती

एवं शिव जागरण आदि का आज के मानव मन पर स्थायी प्रभाव नहीं हो पाता है। क्षेत्रों में शिव शिष्य एवं शिष्याएँ, जिन्हें शिव शिष्यता की अवधारणा की समझ नहीं हो पायी है, शिव गुरू की चर्चा के बदले में भजन, हवन, अष्टयाम, आरती आदि का कार्यक्रम चलाते हैं। शिवचर्चाओं में इन भजन, कीर्तन आदि के कार्यकलापों को कुछ तथाकथित शिव शिष्य/शिष्याएँ व्यक्तिगत भौतिक लाभ के लिए भी बढ़ावा देते हैं। इन क्षेत्रों के सजग शिव शिष्यों/शिष्याओं तथा समिति को चाहिए कि शिव शिष्यता की अवधारणा से क्षेत्र के सभी गुरू भाई/बहनों को अवगत करायें। याद रखना होगा कि कीर्तन, भजन, हवन, आरती आदि शिव शिष्यता का अंग नहीं है।

(2) परिपत्र-प्रथम की कंडिका-21 एवं परिपत्र-द्वितीय की कंडिका-04 में भी यह उल्लेख किया गया है कि क्षेत्रों में आयोजित शिव गुरू परिचर्चा/महोत्सवों में विशेष कर भजन/कीर्तन के समय कुछ आगन्तुक लोग, संभव है उन लोगों ने शिव शिष्यता की घोषणा करायी हो, कभी-कभी झूमने लगते हैं। लोक भाषा में इसे प्रेत बाधा कहा जाता है। यह कमजोर मन का परिचायक है। यह व्यक्ति का उसके मन पर नियंत्रण खोना है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि किसी दुर्घटना को देखकर कमजोर मन वाले लोग या तो बेहोश हो जाते हैं या अजीबोगरीब हरकत करने लगते हैं। आप जानते हैं कि किसी व्यक्ति का मन जब साहसी मन के साथ होता है तो संगति उसे बलशाली बनाती है। शिव को महेश्वर कहा गया है और वे समस्त शक्तियों के जनक हैं। "या शक्ति शिवस्य शक्ति"। शिव सर्वोच्च गुरू हैं, अतएव शिव के गुरू स्वरूप से शिष्य के रूप में जुड़ाव के उद्देश्य से चर्चा-परिचर्चा में तल्लीन व्यक्ति का मन शनैः-शनैः बलशाली होने लगता है। ऐसे कमजोर मन वाले को शिव शिष्य बनने के लिए प्रेरित करना होगा। आपने देखा है कि जैसे-जैसे शिव शिष्यता प्रगाढ़ होती है तथाकथित भूतखेली या प्रेतबाधा कम होने लगती है। उक्त क्षेत्रों में आयोजित शिव गुरू चर्चा/महोत्सवों में भजन, कीर्तन, हवन, आरती के कार्यक्रमों को बंद किया जाना चाहिए और शिव गुरू की चर्चा करने हेतु एकत्रित जनसमूह को शिव शिष्य बनने के लिए प्रेरित करना ही प्रत्येक शिव शिष्य/शिष्या एवं समिति का एकमात्र कर्त्तव्य है।

(3) यदा-कदा ऐसा पाया जाता है कि छद्मवेशी शिव शिष्य/शिष्या अर्थोपार्जन अथवा अन्य निजी लौकिक चाहत से शिव शिष्यता के तीन सूत्रों से अलग मांत्रिक, ओझा, तांत्रिक आदि के रूप में क्षेत्रों में काम करने लगते हैं एवं झाड़-फूँक, हवन, आरती आदि की क्रियाएँ शिव शिष्यता की आड़ में करते हैं और अपने को शिव शिष्य कहकर भीड़ एकत्रित करते हैं। क्षेत्रों के लोग विशेष कर महिलाएँ आस्था के अधीन ठगी जाती हैं। उन क्षेत्रों के सजग शिव शिष्य/शिष्याओं को चाहिए कि गुरू भाई/बहनों को समझायें ताकि वे छद्मवेशी शिव शिष्य/शिष्याओं (तथाकथित) के चंगुल से मुक्त

हो सकें। ऐसे कुकृत्यों से शिव शिष्यता की छवि धूमिल होती है। परिपत्र-प्रथम की कंडिका-14, कंडिका-15 एवं 24, परिपत्र द्वितीय की कंडिका-05 तथा परिपत्र तृतीय की कंडिका-03 के (3) के द्वारा पूर्व से ही प्रचालित किया जाता रहा है कि मुख्यालय शिव गुरू की अवधारणा की परिधि से बाहर दिये गए कोई विचार, वक्तव्य अथवा कोई कृत्य का सहभागी नहीं होगा और न ही उसका उत्तरदायित्व वहन करेगा।

(4) साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चा केन्द्रों पर अधिकतम पचास व्यक्ति ही सम्मिलित हों ताकि ध्वनि विस्तारक यंत्र (लाउडस्पीकर) का प्रयोग आवश्यक न हो। साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चाओं में ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाने की आवश्यकता हो तो नियमानुसार प्रशासन से अनुमति प्राप्त कर ली जाय। कृपया इसे अत्यावश्यक समझा जाय। संस्था एवं न्यास (द्वैय) विधिमान्य नियमों के उल्लंघन का उत्तरदायित्व वहन नहीं करेगा।

(5) परिचर्चा/महोत्सव वास्तव में आध्यात्मिक आयोजन है। पंथ, धर्म (संप्रदाय), स्थान, जाति, वर्ग आदि से परे है। परिचर्चा स्थल पर आध्यात्मिक परिवेश बनाया जाय। सादगी और शांति रखी जाय। "चर्चा अधिक और खर्चा कम" की नीति अपनायी जाय।

3. विदित है कि शिव शिष्य/शिष्याओं की करोड़ से अधिक संख्या होने के कारण यह भी संभव है कि शिव शिष्यता का रंगा सियार बनकर कोई व्यक्ति गुरूभाई/बहनों को शिव गुरू के या वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के नाम पर बेवकूफ बनाकर धन एकत्रित करने की कुचेष्टा करे। इस दिशा में सावधान रहने की जरूरत है। हमारे गुरू शिव शरीर में उपलब्ध नहीं हैं इसलिए उन्हें किसी धन या भौतिक दक्षिणा की जरूरत नहीं है। वास्तव में गुरू दक्षिणा शिष्य की अपने गुरू के प्रति कृतज्ञता है। गुरू शिष्य का संबंध प्रेम का होता है। इसमें पैसे का कोई उपयोग नहीं है। याद रखना चाहिए कि शिव का शिष्य होने के लिए अधेला भी खर्च नहीं होता है। संसार के किसी व्यक्ति को शिव का शिष्य होने की घोषणा करने अथवा शिव चर्चा कर दूसरों को शिव की शिष्यता की ओर अग्रसर कराने हेतु भौतिक सामग्रियों/पैसे (धन) प्राप्त करने का कतई अधिकार नहीं है।

4. कुछ वर्षों से पाया जा रहा है कि शिव शिष्य/शिष्याएँ सभी प्रकार के कार्यक्रमों में अधिकांशतः वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द की तस्वीरें लगा देते हैं। यह उचित नहीं है। व्यक्ति का स्वभाव है कि वह मदद हेतु प्रथमतः प्रत्यक्ष को पकड़ता है। परोक्ष विस्मृत हो जाता है। हमारे गुरू भगवान शिव प्रत्यक्ष नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द की तस्वीरें लोगों को अपने गुरू शिव से जुड़ाव में बाधक हो सकती हैं। हमें चाहिए की जगतगुरू शिव से लोगों का जुड़ाव सुनिश्चित करें। सच्चे अर्थों में यही शिव शिष्यता है। स्वयं से अथवा किसी व्यक्ति से जुड़ाव करना अथवा कराना हमारा ध्येय नहीं है।

5. न्यास द्वैय एवं संस्था लाखों स्थान पर प्रतिदिन चल रही शिव चर्चा का सीमित साधनों के कारण अनुश्रवण नहीं कर पा रहा है। आप जानते हैं कि लाखों शिव शिष्य/शिष्याएँ प्रतिदिन शिव चर्चाओं में निकलते हैं। ऐसी स्थिति में एक-एक व्यक्ति की कथनी-करनी एवं कार्यकलापों पर किसी भी संस्था/संगठन/समूह का नियंत्रण संभव नहीं है तथापि शिव शिष्यता को पूर्णतः आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने हेतु हम कृतसंकल्पित हैं।

6. यह निर्णय पूर्व में भी परिचालित किया गया था कि शिव चर्चाओं से संबंधित सभी कार्यक्रम रात्रि 08 बजे तक समाप्त कर दिये जाएं किन्तु परिवेशजनित कारणों के परिप्रेक्ष्य में संसूचित किया जाता है कि शिव चर्चा से संबंधित सभी आयोजन दिवाकाल में किये जायें और सूर्यास्त से पूर्व निश्चित ही समाप्त किये जायें।

7. <u>जिला शिव कार्य समिति के लिए कतिपय निर्देश :-</u>

(1) समिति का गठन मूलतः शिव शिष्यता के विस्तार के लिए किया गया है। समिति का यह दायित्व बनता है कि वह क्षेत्र में शिव कार्य को गति प्रदान करे।

(2) विदित है कि इस कालखण्ड में शिव की शिष्यता वरेण्य गुरूभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी के आदेश एवं दिशानिर्देश के बाहर कुछ भी नहीं है। अतः समिति अपने क्षेत्र में उनके आदेशों एवं दिशानिर्देशों को अक्षरशः लागू करे।

(3) प्रखण्ड, पंचायत एवं ग्राम स्तर पर गठित जिला शिव कार्य समिति शिव कार्य के लिए सहयोग करे साथ ही उन पर नजर रखे ताकि ये समितियाँ मुख्यालय से प्राप्त दिशानिर्देश के अनुरूप ही कार्य करें।

(4) समिति का यह कार्य होगा कि वरेण्य गुरूभ्राता/मुख्यालय से प्राप्त कोई सूचना जो शिव शिष्य/शिष्याओं के लिए है वह त्वरित गति से उन तक पहुँचे।

(5) शिव कार्य के अतिरिक्त व्यवस्था जनित उत्पन्न कार्यों का निर्वहन करना भी जिला स्तरीय शिव कार्य समिति का दायित्व होगा।

(6) शिव शिष्यता का विचार भारतीय संविधान एवं देश के कानून के अंतर्गत होना है। समिति अगर पाती है कि कोई इस परिधि से बाहर जाकर शिवचर्चा करता/करती है तो इसकी सूचना जिला शिव कार्य समिति अविलंब मुख्यालय को दें एवं मुख्यालय के निर्देश पर उचित कार्रवाई करें, समिति स्वयं भी उचित नियमसंगत कार्रवाई करे।

(7) न्यास शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन शिव कार्य एवं जनोपयोगी कार्यों के लिए जाना जाता है। समिति को चाहिए कि वह सेवा भावना से प्रेरित हो एवं लोक कल्याण हेतु जनहित में कार्य करे।

(8) समाज सेवा एवं जनोपयोगी कार्य न्यास का दूसरा पहलू है और न्यास का अंग होने के नाते समिति चैरिटी का कार्य करे। इस कार्य के लिए आवश्यक होने पर समिति मुख्यालय से सहयोग ले एवं सहयोग करे।

(9) प्रत्येक जिला शिव कार्य समिति में एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष होंगे जिन्हें समिति के अन्य सदस्यों के सहयोग से कार्य करना होगा।

(10) वित्तीय मामले में मुख्यालय किसी भी प्रकार का निर्णय लेने को स्वतंत्र है और वह निर्णय जिला शिव कार्य समिति को अनिवार्य रूप से मान्य होगा।

(11) कभी-कभी दूसरे जिले से गुरूभाई/बहन शिवचर्चा करने के लिए जिले में आते हैं। ऐसे गुरूभाई/बहन को चाहिए कि वह अपने कार्यक्रम की सूचना समिति को दें और समिति उन्हें सहयोग करे। परंतु अगर वे छद्मभेषी शिव शिष्य/शिष्या हैं और वरेण्य गुरुभ्राता के आदेश की परिधि के बाहर शिवचर्चा करते हैं तो इसकी सूचना तुरत मुख्यालय को दें और मुख्यालय के निर्देश पर उचित कार्यवाही करें तथा स्वयं भी उचित कार्रवाई करें।

(12) जिले में आयोजित किसी भी बड़े कार्यक्रम मसलन शिवगुरू महोत्सव या संगोष्ठी पर जिला शिव कार्य समिति को नजर रखनी होगी एवं कार्यक्रम के खर्च का ब्योरा मुख्यालय को सौंपना होगा।

(13) कोई भी शिव शिष्य/शिष्या अगर इस तरह का कोई बड़ा आयोजन जिले में करते हैं तो उनको चाहिए कि सहयोग के लिए वह उक्त कार्यक्रम की सूचना जिला शिव कार्य समिति को दें।

(14) शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन संविधान के दायरे में रह कर अंधविश्वास एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों का विरोध करता है। जिला स्तरीय शिव कार्य समिति को चाहिए की इन चीजों के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाये ताकि भोले-भाले लोग इनके दुष्परिणाम से बचें।

(15) समिति के पदधारकों एवं सदस्यों को मुख्यालय के निर्दिष्ट कार्यों के प्रति उदासीनता, कर्त्तव्यहीनता, गैर कानूनी कृत्यों, अंधविश्वास में संलग्नता आदि आरोपों के कारण किसी भी समय मुख्यालय के द्वारा उक्त व्यक्ति को दायित्वमुक्त किया जा सकेगा एवं संपूर्ण समिति भी भंग की जा सकती है।

(16) समिति के पदधारकों को एक परिचय पत्र निर्गत किया जाएगा जिसकी अवधि एक वर्ष की होगी किन्तु किसी वैधानिक कार्य में उक्त परिचय-पत्र का उपयोग नहीं होगा।

(17) समिति की मासिक अथवा द्विमासिक बैठक समिति के अध्यक्ष अथवा सचिव आहूत कर सकेंगे। समिति की लगातार तीन बैठकों में अनुपस्थित रहने की स्थिति में वैसे पदधारक तथा सदस्य स्वतः समिति के सदस्य नहीं रहेंगे।

(18) वरेण्य गुरुभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी की सदैव चाहत रही है कि कोई शिव-शिष्य / शिष्या समाज, देश और संसार में कोई ऐसा असामाजिक, गैर-आध्यात्मिक और देश के स्थापित नियमों, विधियों के विरुद्ध कार्य नहीं करे जिससे भगवान शिव की छवि धूमिल हो। समिति और सभी शिव-शिष्यों तथा शिष्याओं को इस मामले में सतर्क एवं सावधान रहना होगा।

8. सादर अनुरोध है कि परिपत्र-प्रथम, परिपत्र-द्वितीय, परिपत्र- तृतीय एवं परिपत्र- चतुर्थ को ध्यान से पढ़ा जाय एवं इसका अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। सभी क्षेत्रों के सभी सजग शिव शिष्य / शिष्याओं को परिपत्र-प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ के सभी बिन्दुओं से अवगत कराना हम सभी का दायित्व है। कृपया इसका अनुपालन सुनिश्चित करने की कृपा की जाय। शेष परिपत्र - प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ एवं प्रस्तुत परिपत्र की सभी कंडिकाएँ प्रभावी मानी जायेंगी।

वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी से आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास अपेक्षित है। हम सभी पंचानन, दक्षिणामूर्ति जगतगुरू भगवान शिव, जो परमसत्ता के वाच्य हैं, उनके शिष्य के रूप में ज्ञान दीप की अवली से इस वसुंधरा को आलोकित करने का संकल्प लेते हैं ताकि मानवीय सृष्टि करूणामय, सुखमय और शिवमय हो सके।

शुभेच्छु

आनन्द

(अर्चित आनन्द)
मुख्य सलाहकार,

कार्यालय शिव शिष्य हरीन्द्रानन्द फाउंडेशन, राँची।

पत्रांक :- शि.शि.ह.फा.-36 / 22 दिनांक :- 12.07.2022

प्रतिलिपि :- जिला शिव कार्य समिति के सभी पदधारकों, सदस्यों तथा सभी सजग शिव शिष्य / शिष्याओं को उपर्युक्त पत्र के अनुपालन हेतु प्रेषित। सादर।

भवदीय

Brinha

अध्यक्ष
शि.शि.ह.फाउंडेशन, राँची।